

मिट्टी, कौशल और आत्मनिर्भरता: वर्मीकम्पोस्ट प्रशिक्षण द्वारा ग्रामीण महिलाओं को जीवन को परिवर्तन

कपिल वर्मा

कार्यक्रम समन्वयक, सीईएएसआई — भारत में कृषि कौशल उत्कृष्टता केंद्र,
कानपुर, उत्तर प्रदेश

परिचय

जब उत्तर प्रदेश के कानपुर नगर के शिवराजपुर ब्लॉक के ककूपुर हलबाल गाँव पर जाड़े की सुबह की धूप पड़ती है, तो आँगनों और खेत के कोनों में एक मौन परिवर्तन होता दिखता है। सादे छाया ढाँचों के नीचे, वर्मीबेड की पंक्तियाँ लगी हैं — जहाँ लाखों केंचुए चुपचाप काम कर रहे हैं। कई लोगों के लिए ये केवल खाद इकाइयाँ हैं। किंतु उन्हें संभालने वाली ग्रामीण महिलाओं के लिए ये आय, पहचान और स्वतंत्रता के प्रतीक हैं।

एक ऐसे क्षेत्र में जहाँ महिलाओं ने लंबे समय से बिना मान्यता या अपनी आय के कृषि में योगदान दिया है, एक छह दिवसीय वर्मीकम्पोस्ट उत्पादक प्रशिक्षण कार्यक्रम (5 दिन प्रशिक्षण + 1 दिन मूल्यांकन) ने एक बदलाव को जन्म दिया है। कृषि कौशल परिषद भारत (एएससीआई) और कृषि कौशल उत्कृष्टता केंद्रों द्वारा समर्थित तथा पेप्सिको के वित्त पोषण के साथ, इस कार्यक्रम ने स्थिरता को आजीविका सृजन के साथ जोड़ा — महिलाओं को इसके केंद्र में रखते हुए।

30 प्रतिभागियों में से 25 महिलाएँ (83.3%)



और 5 पुरुष (16.7%) थे, जिससे यह प्रशिक्षण महिला-नेतृत्व वाली कृषि उद्यमिता का एक सशक्त उदाहरण बन गया।

दोहरी चुनौती: मृदा अवक्रमण और लैंगिक असमानता

प्रशिक्षण ने मृदा स्वास्थ्य में गिरावट और ग्रामीण महिलाओं के लिए सीमित आय के अवसरों की दोहरी समस्याओं का समाधान किया। वर्मीकम्पोस्टिंग मृदा उर्वरता को बहाल करती है, साथ ही एक कम-निवेश,

घर-आधारित उद्यम बनाती है जिसे महिलाएँ घरेलू जिम्मेदारियों के साथ-साथ संभाल सकती हैं।

प्रशिक्षण संरचना और शिक्षण दृष्टिकोण

छह दिवसीय कार्यक्रम में पाँच दिन गहन व्यावहारिक प्रशिक्षण और एक दिन मूल्यांकन शामिल था। प्रतिभागियों ने मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, केंचुआ जीव विज्ञान, वर्मीबेड तैयारी, कच्चे माल प्रबंधन, नमी एवं वातन नियंत्रण, कटाई तकनीक, पैकेजिंग और विपणन रणनीतियाँ सीखीं।

प्रत्यक्ष शिक्षण ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रतिभागियों ने वर्मीबेड बनाए, सामग्री की परतें चढ़ाईं और खाद बनने की प्रक्रिया देखी। जब उन्होंने अपशिष्ट को मूल्यवान जैविक खाद में बदलते देखा तो प्रारंभिक हिचकिचाहट आत्मविश्वास में बदल गई।

कौशल से उद्यम तक

वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन के लिए न्यूनतम अवसरों की आवश्यकता होती है और ग्रामीण परिवारों में उपलब्ध सामग्रियों का

उपयोग होता है। एक वर्मीबेड 45-60 दिनों के चक्रों में खाद उत्पादन कर सकती है। इससे नियमित आय, कम उर्वरक व्यय और लघु उद्यमों में विस्तार के अवसर बनते हैं।

आर्थिक प्रभाव

- अतिरिक्त घरेलू आय
- रासायनिक उर्वरकों पर व्यय में कमी
- स्थानीय किसानों और नर्सरियों को खाद बेचने का अवसर

कृषि प्रभाव

- मृदा संरचना और सूक्ष्मजैविक गतिविधि में सुधार
- पोषक तत्वों की उपलब्धता में वृद्धि
- जैविक और प्राकृतिक खेती प्रथाओं को समर्थन

पर्यावरणीय प्रभाव

- खेत और घरेलू जैविक अपशिष्ट का पुनर्चक्रण
- फसल अवशेषों के जलाने में कमी
- कृत्रिम निवेशों पर कम निर्भरता

सामाजिक परिवर्तन

शायद सबसे सार्थक बदलाव सामाजिक है। जो महिलाएँ कभी खेतों में चुपचाप काम करती थीं, वे अब उत्पादक और उद्यमी के रूप में पहचानी जाने लगी हैं। घरेलू चर्चाओं में अब उत्पादन योजना, मूल्य निर्धारण और विपणन संबंधी निर्णय शामिल होने लगे हैं। वर्मीबेड केवल एक खाद इकाई से कहीं अधिक बन गई है — यह आत्मविश्वास, ज्ञान और आर्थिक पहचान का प्रतीक है।

उद्यम आरंभ के लिए सहायता

प्रशिक्षण से परे निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए, प्रतिभागियों को मूल्यांकन के बाद प्रमाण-पत्र और तत्काल उपयोग के लिए वर्मीबेड प्राप्त हुईं। इस प्रत्यक्ष संपत्ति समर्थन ने उन्हें बिना देरी के घर पर उत्पादन शुरू करने में सहायता की।

आर्थिक, कृषि संबंधी और पर्यावरणीय लाभ

आर्थिक दृष्टि से, वर्मीकम्पोस्टिंग उर्वरक लागत को कम करती है और अतिरिक्त आय के अवसर सृजित करती है। कृषि की दृष्टि से, यह मृदा



संरचना, सूक्ष्मजैविक जीवन और पोषक तत्वों की उपलब्धता में सुधार करती है। पर्यावरणीय दृष्टि से, यह जैविक अपशिष्ट के पुनर्चक्रण को बढ़ावा देती है और रासायनिक निर्भरता को कम करती है।

सामाजिक परिवर्तन और महिला सशक्तिकरण

सामाजिक दृष्टि से, प्रभाव परिवर्तनकारी रहा है। महिलाएँ उत्पादक और उद्यमी की भूमिका में कदम रख रही हैं, कृषि पर घरेलू निर्णय-प्रक्रिया और सामुदायिक चर्चाओं में भाग ले रही हैं।

सामाजिक परिवर्तन और महिला सशक्तिकरण सामाजिक दृष्टि से, प्रभाव परिवर्तनकारी रहा

है। महिलाएँ उत्पादक और उद्यमी की भूमिका में कदम रख रही हैं, कृषि पर घरेलू निर्णय-प्रक्रिया और सामुदायिक चर्चाओं में भाग ले रही हैं।

जब महिलाएँ मिट्टी का पोषण करती हैं, तो वे स्वयं कृषि के भविष्य का पोषण करती हैं।

